B.A. III Part Hindi Hons ~~[struck]~~ 1/2/22 (2)

सूर का वात्सल्य

डॉ० अरचना कुमारी

प्रश्न उठता है कि सूर को वात्सल्य वर्णन में इतनी सफलता क्यों मिली। इसका उत्तर यह है कि सूर बाल मनोविज्ञान के चतुर चितेरे थे। उन्होंने बालकों की अन्तर्-आत्मा में प्रवेश कर बालकों के अन्तर्मन का अद्भुत चित्रण किया।

दूसरा यह कि सूर का वात्सल्य वर्णन सामान्य बालकों जैसा है। सूर के कृष्ण अवतारी पुरुष नहीं हैं। सूर के कृष्ण एक साधारण बालक हैं, जो रूठते हैं, मचलते हैं, जो चोटी बढ़ने की जिद करते हैं और माखन चुराते हैं।

तीसरा कारण यह कि सूर को माता का हृदय ही वात्सल्यमय हृदय प्राप्त था। माता का हृदय ही की पूरी झाँकी दे सकता है।

चौथा कारण यह कि सूर ने वात्सल्य के क्षेत्र में यशोदा की ममता उजागर करके सूर का दिया है। यशोदा को उपालम्भ रात-दिन मोहन के वात्सल्य वर्णन उद्घाटित हो उठा है।

सूर के वात्सल्य वर्णन की विशेषताओं से तुलना करने पर हम पाते हैं कि इन कवियों में तुलना करने पर वाल्मीकि के काव्य में अद्वितीय श्रेष्ठता होती है। वाल्मीकि ने भी सूर के समान वात्सल्य वर्णन किया है जो कालिदास ने भी शकुन्तला में किया है। वह केवल पिता-पुत्र वात्सल्य का चित्र खींचा है वह केवल भाव की मनोवैज्ञानिकता का बयान है। सूर जैसी स्वाभाविकता नहीं है। तुलसीदास ने जो कवितावली, गीतावली और रामचरित मानस में जो श्रीराम के वात्सल्य का वर्णन किया है वह सूर के समान साधारण हुआ है। हरिऔध ने प्रिय-प्रवास में कृष्ण के तथा गुप्त जी ने यशोधरा में राहुल के वात्सल्य का वर्णन किया है वह भी सूर की समता नहीं है। गुप्त जी के राहुल में काफी समानता है जो इनको माँ तथा पिता के अधिकार का ज्ञान करते हैं। वर्डस्वर्थ तथा लॉगफेलो के बाल वर्णन में स्वाभाविकता का पुट रहा है। सूर जैसी स्वाभाविकता वात्सल्य के क्षेत्र में किसी को नहीं मिली है।

अतः मैं स्पष्टतः कह सकता हूँ कि सूर का दूसरा नाम वात्सल्य है और वात्सल्य का दूसरा नाम सूर है। सूर जैसा वात्सल्य वर्णन का चितेरा आज तक दूसरा कोई न हो सका।